नामांक Roll No.

No. of Questions — 25

No. of Printed Pages — 7

VU—38–2—Hindi Sah. II

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा, 2011

वैकल्पिक वर्ग I (OPTIONAL GROUP I — HUMANITIES)

हिन्दी साहित्यम् — द्वितीय पत्र

(HINDI SAHITYAM — Second Paper)

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 60

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्नपत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें ।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं । प्रश्न संख्या **23**, **24** एवं **25** में आन्तरिक विकल्प हैं ।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें ।
4. जिस प्रश्न के एक से अधिक समान अंकवाले भाग हैं, उन सभी भागों का हल एक साथ सतत् लिखें ।
5. प्रश्न क्रमांक **1** के चार भाग (i, ii, iii तथा iv) हैं । प्रत्येक भाग के उत्तर के चार विकल्प (**अ, ब, स** एवं **द**) हैं । सही विकल्प का उत्तराक्षर उत्तर-पुस्तिका में निम्नानुसार तालिका बनाकर लिखें :

प्रश्न क्रमांक	सही उत्तर का क्रमाक्षर
1. (i)	
1. (ii)	
1. (iii)	
1. (iv)	

1. (i) ''रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'' — काव्य की यह परिभाषा दी है

(अ) पण्डितराज जगन्नाथ ने

(ब) आचार्य विश्वनाथ ने

(स) भामह ने

(द) मम्मट ने । $\frac{1}{2}$

(ii) हिन्दी साहित्य के आदिकाल का प्रसिद्ध महाकाव्य है

(अ) साकेत (ब) रामचरितमानस

(स) पृथ्वीराज रासो (द) कामायनी । $\frac{1}{2}$

(iii) 'वात्सल्य' रस के प्रमुख कवि हैं

(अ) तुलसीदास (ब) सूरदास

(स) बिहारी (द) मीरा । $\frac{1}{2}$

(iv) सिर पै बैठ्यौ काग, आँख दोउ खात निकारत ।

खींचत जीभहि स्यार, अतिहि आनन्द उर धारत ॥

उपर्युक्त पंक्तियों में रस है

(अ) अद्‌भुत रस (ब) वीर रस

(स) रौद्र रस (द) वीभत्स रस । $\frac{1}{2}$

निर्देश : प्रश्न संख्या **2** से **5** तक के लिए उत्तर-सीमा **15** से **20** शब्द है ।

2. काव्य कला के विभिन्न घटक बताइए । 1

3. आचार्य भामह ने काव्य-प्रयोजन किसे माना है ? 1

4. निर्वेद या शम भाव कौन-से रस का स्थायी भाव है और यह कैसे उत्पन्न होता है ? 1

5. भट्टनायक के मतानुसार रस का भोक्ता कौन होता है ? 1

निर्देश : प्रश्न संख्या **6** से **16** तक के लिए उत्तर-सीमा **50** शब्द है ।

6. 'वक्रोक्ति' शब्दालंकार है या अर्थालंकार, यह बताते हुए इसके लक्षण व उदाहरण दीजिए । $\frac{1}{2} + 1 + \frac{1}{2}$

7. नेहु न नैननु कौ कछु, उपजी बड़ी बलाइ ।

   नीर भरे नित प्रति रहै, तऊ न प्यास बुझाइ ॥

   उपर्युक्त पंक्तियों में निहित अलंकार का नामोल्लेख करते हुए लक्षण भी लिखिए । 1 + 1

8. 'प्रतीप' अलंकार में उपमेय व उपमान की किन्हीं दो स्थितियों को बताते हुए एक उदाहरण दीजिए । 1 + 1

9. हंस छोड़ आये कहाँ मुक्ताओं का देश ?

   यहाँ बंदिनी के लिए लाये क्या संदेश ?

   उपर्युक्त पंक्तियों में मात्राओं की गणना करके छंद का नाम व उसके लक्षण लिखिए । 1 + 1

10. धर्म के मग में अधर्मी से कभी डरना नहीं

    चेत कर चलना कुमारग में कदम धरना नहीं

    शुद्ध भावों में भयानक भावना भरना नहीं

    बोध-वर्धक लेख लिखने में कमी करना नहीं ।

    उपर्युक्त पंक्तियों में मात्राओं की गणना करके प्रयुक्त छंद का नाम व उसके लक्षण लिखिए । 1 + 1

11. किसी भी मात्रिक छंद में मात्रा लगाने के नियमों का उल्लेख कीजिए । 2

12. अनुभाव का तात्पर्य बताते हुए अनुभाव के भेदों को स्पष्ट कीजिए । 1 + 1

13. 'आज की तरह, क्या तुम भी मानती थीं

    पुत्री के जन्म को अभिशाप, दहेज भय से',

    — 'राष्ट्रमाता यशोदा' की इन पंक्तियों के आधार पर समझाइए कि योगमाया का परित्याग यशोदा ने किस उद्देश्य के लिए किया था । साथ ही वर्तमान समाज में पुत्री जन्म के प्रति उत्पन्न भावनाओं को भी समझाइए । 1 + 1

14. 'हार कर क्या शीश अपना मैं झुका दूँ,
मैं सफलता का अटल विश्वास हूँ ।'
'अरमान जिन्दा है अभी' कविता की उपर्युक्त पंक्तियों में कवि समाज को क्या संदेश देना चाहता है ? 2

15. 'मिट्टी के नीचे ही दब कर, उठ सकते मिट्टी के ऊपर ।'
'रज परिचय देगी स्वयं उभर' कविता की इन पंक्तियों को पढ़ कर आपके मन में क्या भाव उत्पन्न होते हैं ? स्पष्ट कीजिए । 2

16. 'पवन जगावत आग कौ, दीपहिं देत बुझाय' — इस कथन का तात्पर्य किसी मौलिक उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए । 2

निर्देश : प्रश्न संख्या **17** से **22** तक के लिए उत्तर-सीमा **80** से **100** शब्द है ।

17. 'जयशंकर प्रसाद का काव्य छायावादी काव्य शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है ।' इस कथन के संदर्भ में प्रसाद के काव्य में निहित छायावाद के निर्णायक तत्त्वों को समझाइए । 3

18. 'छोटे हैं बढ़ने का वर दो' — 'पीपल के पीले पत्ते' कविता की इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए । 3

19. 'कौन जन्म के पुण्य कि ऐसे शुभ दिन आये री' — 'मंगल वर्षा' कविता में कवि ने वर्षा को पुण्यों का प्रताप व शुभ दिन क्यों कहा है ? कृषक परिवार व कृषक वधू के संदर्भ में समझाइए । 3

20. 'पथ भूल न जाना पथिक कहीं' कविता में पथिक को विचलित करने वाली कौन-कौन-सी स्थितियों का उल्लेख किया गया है ? 3

21. 'लो उठो, गाओ, घिरो, छाओ, रचो बलि-पथ सुहाने' — राष्ट्र-निर्मण व राष्ट्र-सुरक्षा के संदर्भ में वर्तमान काल में इन पंक्तियों में निहित संदेश की प्रासंगिकता समझाइए । 3

22. महादेवी वर्मा की संकलित कविता 'दूर के संगीत सा वह कौन है', के भाव पक्ष व कला पक्ष का विवेचन कीजिए । 3

23. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5

(उत्तर सीमा लगभग **200** शब्द)

कुछ भी अवध्य नहीं तुझे, सब आखेट है ।
एक बस मेरे मन-विवर में दुबकी कलौंस को
दुबकी ही छोड़ कर क्या तू चला जायेगा ?
ले, मैं खोल देता हूँ कपाट सारे
मेरी इस खण्डहर शिरा को छेद दे
आलोक की अनी से अपनी
गढ़ सारा ढाह कर ढूह भर कर दे ।
विफल दिनों की कलौंस माँज जा
मेरी आँखें आँज जा
कि तुझे देखूँ
देखूँ और मन में कृतज्ञता उमड़ आये ।
पहनूँ सिरोपे से ये कनक तार तेरे -

अथवा

हँसने लगे कुसुम कानन के
देख चित्र-सा एक महान,
विकस उठीं कलियाँ डालों में
निरख मैथिली की मुस्कान ।
कौन-कौन से फूल खिले हैं
उन्हें गिनाने लगा समीर
एक-एक कर गुन-गुन करके
जुड़ आई भौंरों की भीर ॥
नाटक के इस नये दृश्य के
दर्शक थे द्विज लोग वहाँ,
करते थे शाखासनस्थ वे
समधुप रस का भोग वहाँ ।

24. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5

(उत्तर सीमा लगभग **200** शब्द)

मैं नहीं चाहता चिर सुख
मैं नहीं चाहता चिर दु:ख,
सुख-दु:ख की आँख मिचौनी में,
खोले जीवन अपना मुख ।

सुख-दु:ख के मधुर मिलन से
यह जीवन हो परिपूरण,
फिर घन में ओझल हो शशि,
फिर शशि में ओझल हो घन ।

अथवा

फिर फिर सदा
संघर्ष का अणु बम यहाँ जाँचा गया
यह व्यक्ति और समाज का
उत्तप्त मंथन काल है ।
संक्रान्ति की घड़ियाँ बनी हैं शृंखला
बंदी हुई है देह
मन को बाँधने बढ़ते पतन के हाथ हैं
है फन विष का फैलता ही जा रहा
अब डूबता अंतिम ग्रहण की छाँह में
आलोक हत नक्षत्र मिट्टी से बना
जिसका कि पृथ्वी नाम है
बस इसलिए उजड़ी धरा
यह फूल सूखा ही खिला
केसर बिना ।

25. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 4

(उत्तर सीमा लगभग **200** शब्द)

ओ, मनु-आदम के वंशजों !
मेरे लिए
तुमने बनाए अभयारण्य
जहाँ विचरण कर सके निर्भय
मेरी प्रिय बाघिन
हमारे शावकों के साथ
कि, जहाँ विचरण कर सकें निर्भय
हमारे हत्यारे
किया जा सके हमारा वध, बे-रोकटोक
अब, मैं सदा के लिए लुप्त हो जाऊँगा
फिर भी झाँकता रहूँगा
अपनी अदम्य दहाड़ के साथ
ट्यूरिज्म डिपार्टमेंट के सुचिक्कण
चित्ताकर्षक पोस्टरों के बीच ।

अथवा

आज हौं देख्यो गिरिधारी ।
सुन्दर बदन मदन की सोभा चितवन अनियारी ।
बजावे बंसी कुंजन में ।
गावत तान तरंग रंग धुनि नाचत ग्वालन में ।
माधुरी मूरति है प्यारी ।
बसी रहें निस दिन हिरदै में टरै नहीं टारी ।
ताही पर तन धन मन बारी ।
वह मूरति मोहनी निहारत लोक लाज हारी ।
तुलसी बन कुंजन संचारी ।
गिरिधर लाल नवल नट नागर मीराँ बलिहारी ॥